क्रियात्मक पक्ष

(Conative or Psychomotor Domain)

हमारे व्यवहार का क्रियात्मक पक्ष गतिवाही कौशल (Motor skill) तथा ऐसी क्रियाओं में प्रगट होता है जिनके लिये हमारी मांसपेशीय (Muscular) एवं आंगिक गतियों की आवश्यकता होती है। (Objectives dealing with muscular or motor skills such as mainpulation of apparatus, come under this category)

क्रियात्मक पक्ष के स्तर निम्न हैं—

Scanned with CamScanner

(1) उत्तेजना (Impulsion) : इसमें कार्य के प्रति उत्तेजना लाई जाती है।

(2) कार्यशैली (Mainpultion) : बालक उत्तेजना के आधार पर क्रियात्मक क्रिया सम्पादित करता है।

(3) नियन्त्रण (Control) : इसके द्वारा बालक अपनी क्रिया को साधता है।

(4) समायोजन (Co-ordination) : इसमें कई क्रियाओं पर नियन्त्रण के आधार पर उनके मध्य समायोजन लाया जाता है।

(5) स्वाभाविकरण (Naturalisation) : इसके अन्तर्गत कार्य करने की एक शैली बन जाती है और एक विशेष गति एवं ढंग से कार्य सम्पादित होता है।

(6) आदत अथवा कौशल (Habit or Skill) : इसके अन्तर्गत कार्य करते रहने की शैली एक आदत बन जाती है।

E.J. Simpson ने क्रियात्मक पक्ष के स्तर निम्न बताये हैं—

(1) प्रत्यक्षीकरण (Perception)

(2) व्यवस्था (Set)

(3) निर्देशात्मक अनुक्रिया (Guided Response)

(4) कार्यप्रणाली (Mechanism)

(5) जटिल प्रत्यक्ष अनुक्रिया (Complex overt Response)

व्यवहार के इन तीनों पक्षों में परस्पर सम्बन्ध एवं सामञ्जस्य रहता है।

क्रियात्मक पक्ष का विवरण इस प्रकार है—

1. प्रत्यक्षीकरण (Perception)
   (i) निर्मित करना (to construct)
   (ii) रेखाचित्र खींचना (to sketch)
2. व्यवस्था (Set)
   (i) आकार बनाना (to design)
   (ii) बनाना (to make)
3. निर्देशित अनुक्रिया (Guided Response)
   (i) पहचानना (to identify)
   (ii) स्थापित करना (to fix)
4. कार्य प्रणाली (Mechanism)
   (i) मरम्मत करना (to mend)
   (ii) अभ्यास करना (to drill)
5. जटिल प्रत्यक्ष अनुक्रिया (Complex Overt Response)
   (i) जोड़ना (to connect)
   (ii) सृजन (to create)

Scanned with CamScanner

(iii) परिवर्तित करना (To change)

(iv) स्थानीयकरण करना (To locate)

Bloom's Taxonomy

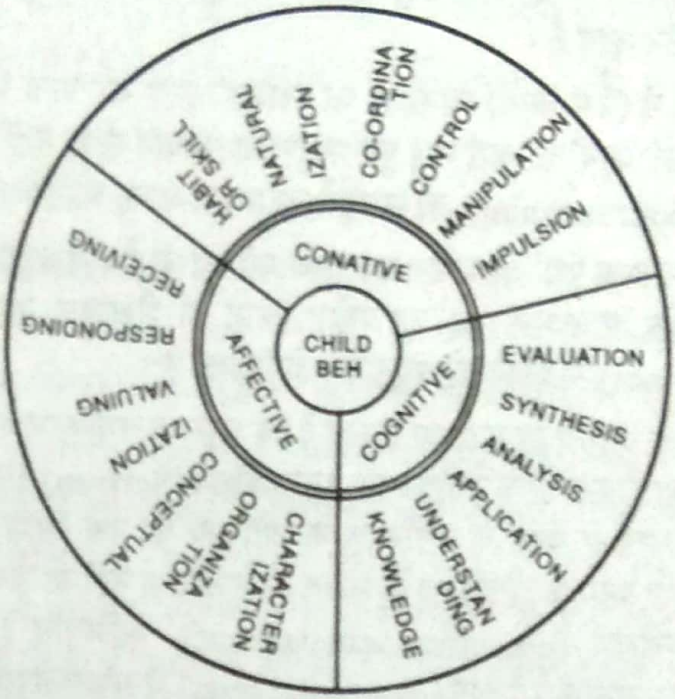

ब्लूम के वर्गीकरण की आलोचना

(Criticism of Bloom's Taxonomy)

ब्लूम के वर्गीकरण की आलोचना मुख्यत: **लॉटन** (Lawton) 1973 तथा **केली** (Kelly) 1977 ने की जो इस प्रकार है :

1. ब्लूम ने उद्देश्यों को तीन विभिन्न पक्षों में वर्गीकृत किया है। इस प्रकार के वर्गीकरण की प्रक्रिया स्वाभाविक (natural) प्रतीत न होकर काल्पनिक (artificial) अधिक लगती है क्योंकि व्यवहार में ये तीनों पक्ष एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित (inter-related) हैं।

2. कुछ व्यवहारों के वर्गीकरण में आम सहमति देखने को नहीं मिलती। उदाहरणार्थ, ब्लूम के वर्गीकरण के आधार पर परीक्षा के लिये प्रश्नों (test-items) के चयन में सभी चयनकर्त्ता (Setters) प्रश्न विशेष (particular items) को समान वर्गीकृत श्रेणी में रखें यह आवश्यक नहीं। कुछ परीक्षक एक ही प्रश्न को अलग-अलग वर्ग (category) में रखते हुए देखे गये है।

3. ब्लूम के 'ज्ञानात्मक पक्ष' के संचयी वर्गीकरण क्रम (cumulative classification order) पर विशेष रूप से प्रश्न चिह्न लगता है और उसमें विशेषकर 'मूल्यांकन' स्तर पर,क्योंकि वास्तव में मूल्यांकन की प्रक्रिया सम्पूर्ण वर्गीकरण में निरन्तर विद्यमान रहती है न कि यह केवल वर्गीकरण का एक स्तर मात्र है।

4. ब्लूम द्वारा प्रतिपादित वर्गीकरण का प्रयोग मात्र 'मापित व्यवहार' (Measured behaviour) की दृष्टि से किया जाता है। यह वर्गीकरण बालक के उन व्यवहारों की उपेक्षा करता है जिन्हें मापना प्राय: सम्भव नहीं होता अथवा जो कम महत्त्वपूर्ण होते हैं।

Scanned with CamScanner

5. ब्लूम का वर्गीकरण पाठ्यक्रम के सभी क्षेत्रों तथा अधिगम की समस्त परिस्थितियों में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

6. ब्लूम के वर्गीकरण में 'उच्च स्तरों (Higher categories) के लिये उद्देश्यों का निर्धारण करना एक अत्यन्त कठिन कार्य है।

7. कुछ विषयों में (जैसे कला) व्यवहारों का विशिष्टीकरण कर पाना प्रायः असम्भव अथवा अवाँछित होता है। दूसरे 'ज्ञान' का अर्थ मात्र पुनः स्मरण या पहचान से ही नहीं लगाना चाहिये बल्कि इससे विस्तृत अर्थ (wider meaning) को समझने का प्रयास करना चाहिये।

8. ब्लूम के 'ज्ञानात्मक पक्ष' का प्रयोग उपलब्धि परीक्षण के क्षेत्र में बहुतायत रूप में देखने को मिलता है लेकिन उसके 'भावात्मक पक्ष' का प्रयोग किसी भी शैक्षणिक अथवा परीक्षण कार्यक्रम (Testing programmes) में देखने को बहुत कम ही मिलता है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि ब्लूम के वर्गीकरण की बहुत आलोचना की गई है। इसमें से कुछ आलोचनाओं के संतोषजनक उत्तर **स्क्रीवन (Scriven)** 1967 ने देने की कोशिश की है तथा उसने पूरी तरह से ब्लूम के वर्गीकरण के औचित्य का पक्ष लिया है। फिर भी, इन सब आलोचनाओं के होते हुए ब्लूम के वर्गीकरण के महत्त्व को झुठलाया नहीं जा सकता तथा इसका प्रयोग वस्तुनिष्ठ उपलब्धि परीक्षण (objective achievement), अभिवृत्ति (aptitude), तत्परता (readiness) तथा निदानात्मक परीक्षणों (diagnostic tests) में सफलतापूर्वक किया जाता रहेगा।

Scanned with CamScanner